

5. सत्साहस (शक्तिषा प्रसंग)

(घ) नमिनलखिति प्रश्नों के उत्तर लखिए-

अतलिघूतरीय प्रश्न-

1. कर्तव्यपरायण व्यक्तिके चरित्र में क्या वशिषता पाई जाती है?

कर्तव्यपरायण व्यक्तिके चरित्र में **नषिठा, ईमानदारी, जमिमेदारी, संयम, स्वार्थहीनता और समाज के प्रति प्रतबिद्धता** की वशिषताएँ पाई जाती हैं।

2. साहसी व्यक्तिके लिए स्वार्थ-त्याग क्यों आवश्यक है?

साहसी व्यक्तिके लिए स्वार्थ-त्याग आवश्यक है, क्योंकि यह उसे **समाज सेवा, उच्च उद्देश्य और नःस्वार्थ कर्तव्यों** की ओर प्रेरति करता है।

3. बुद्धन सहि द्वारा सत्साहस का कौन-सा कार्य कया गया?

बुद्धन सहि ने **सत्साहस** का कार्य करते हुए **समाज में व्याप्त कुरीतियों** और **अंधवशिवास** के खलिफ आवाज उठाई और सुधार की दशिा में कदम बढ़ाए।

लघूतरीय प्रश्न-

1. लेखक के अनुसार साहस की कौन-कौन सी श्रेणियों हैं?

लेखक के अनुसार साहस की **तीन श्रेणियों** हैं: **शारीरिक साहस, मानसकि साहस, और आध्यात्मकि साहस**, जो वभिन्न परसिथितियों में व्यक्त होते हैं।

2. सत्साहस से आप क्या समझते हैं?

सत्साहस का मतलब है **सत्य और धर्म** के रास्ते पर चलने का साहस, जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाता है।

3. सत्साहसी व्यक्तिके में क्या वशिषता पाई जाती है?

सत्साहसी व्यक्तिके में **सत्य, नैतिकता, और धर्म** के प्रति गहरी नषिठा होती है। वह **समाज सुधार, स्वार्थ का त्याग, और आध्यात्मकि मार्ग** पर चलते हुए सकारात्मक बदलाव लाता है।

4. साहसी व्यक्तिके में कौन-कौन-से गुण पाए जाते हैं?

साहसी व्यक्तिके में **धैर्य, आत्मवशिवास, नषिठा, ईमानदारी, दया, और स्वार्थ-त्याग** जैसे गुण होते हैं। वह **कठनि परसिथितियों** में भी **सही नर्णय** लेता है और **समाज के हति** में काम करता है।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न-

1. कर्तव्यज्ञान शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं पशु समझना चाहिए। क्यों? सोदहारण स्पष्ट कीजिए।

कर्तव्यज्ञान शून्य मनुष्य **स्वार्थ, हसिा और अज्ञान** के आधार पर जीवन जीता है, जैसे पशु। उदाहरण स्वरूप, बनिा कर्तव्य नभाए केवल स्वार्थ के लिए जीने वाला व्यक्तिसमाज में असमाजकि होता है।

2. 'बिना किसी प्रकार का साहस दिखाए किसी जातीय देश का इतिहास नहीं बन सकता' यह कथन कहाँ तक उचित है? स्पष्ट कीजिए।

यह कथन **उचित** है, क्योंकि किसी जातीय देश का इतिहास साहसिक कार्यों और संघर्षों से ही बनता है। बिना साहस के, न तो परिवर्तन संभव है, न ही उन्नति।